Eklavya University

Bachelor of Art

(Jain and Prakrit Studies)

Session 2021-22 (से लागू)

I Year

बी. ए. प्राकृत भाषा का पाठ्यक्रम

भाग अ – परिचय

कार्यक्रम : प्रमाण पत्र	कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष	वर्ष : 2021	सत्र : 2021–22

विषय : प्राकृत भाषा

1.	पाठ्यक्रम का कोड	EUA1-PRAK1T
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	प्राकृत भाषा और व्याकरण (प्रश्न–पत्र – 1)
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ....)	कोर कोर्स
4.	**पूर्वापेक्षा (Prerequisite)** (यदि कोई हों)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए... छात्र ने विषय.......... **प्राकृत** में उत्तर मध्यमा / किसी भी विषय में कक्षा 12 / प्रमाण पत्र / डिप्लोमा में लिया हो।.... इस पाठ्यक्रम को निम्नलिखित विषयों के छात्रों द्वारा एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुना जा सकता है – सभी के लिए उपलब्ध **(Open For all)**
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO)	1. विश्व की धरोहर के रूप में घोषित शिलालेखों एवं आगम साहित्य के ज्ञान से छात्र लाभान्वित होंगे। 2. व्याकरण के माध्यम से प्राकृत साहित्य की संरचना की समझ विकसित होना। 3. छात्र में प्राकृत लेखन और अनुवाद की कला का विकास होगा। 4. छात्र के धार्मिक और आध्यात्मिक व मनोवैज्ञानिक विकास में सहयोगी सिद्ध होगी। 5. प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा मिलेगी। 6. प्राचीन इतिहास और संस्कृति से छात्र सुपरिचित हो सकेगा। 7. पृथ्वी की महिमा से अवगत होकर छात्र में पृथ्वी माता के प्रति समर्पण की भावना विकसित होगी। 8. वाक्य निर्माण व प्रयोग का ज्ञान होगा। 9. प्राकृत भाषा में अनुवाद कला एवं सम्भाषण कौशल का विकास होगा।

Ashish

6.	क्रेडिट मान	06	
7.	कुल अंक	अधिकतम अंक : 30 + 75	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक : 33

भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

व्याख्यान की कुल संख्या – ट्यूटोरियल–प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में) : L-T-P :- 03

इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
I	1. **प्राकृत भाषा का परिचय** : प्राकृत भाषा का स्वरूप एवं महत्व, छान्दस् प्राकृत एवं कथ्य प्राकृत का परिचय एवं विशिष्टताएं। 2. **प्राकृत भाषा** : स्वरूप, लक्षण, भेद, रचनाकाल। 3. **आगम साहित्य** : अंग, उपांग, मूलसूत्र, छेदसूत्र, प्रकीर्णक, चूलिका, कषायपाडुड, षट्खण्डागम का सामान्य परिचय। 4. **प्राकृत के प्रसिद्ध आचार्यो का परिचय** : धरसेन, गुणधर, पुष्पदन्त, भूतबली, कुन्दकुन्द वट्टकेर, शिवार्य, कार्तिकेय, नेमिचन्द्र, देवसेन, वसुनन्दि।	15
II	**आगम सूत्रों** (गाथाओं) : व्याख्या, समीक्षा एवं व्याकरणिक टिप्पणियां– 1. **प्रवचनसार** (गाथा1–50) 2. **आचारांग** – प्रथम अध्ययन 3. **कषायपाडुड** (गाथा 1–20)	15
III	**शब्दरूप, धातुरूप एवं लकार परिचय :–** 1. **शब्दरूप** – राम, कवि, भानु, पितृ, लता, नदी, वधू, मातृ, फल, वारि, आत्मन्, वाक्, सर्व, तत्, यत्, इदम्, अस्मत्, तथा युष्मत्। 2. **धातुरूप** – पठ् (पढ), भू (हो), श्रु (सोच्छ), रुद् (रोच्छ), वद् (वोच्छ), दृश् (दच्छ), मुच् (मोच्छ), भुज् (भुज्)। 3. **लकार परिचय** – धातु रूप– (परस्मैपदी एवं आत्मनेपदी, भविष्यत् काल, विधि तथा आज्ञावाची धातु, प्रत्यय, क्रियातिपत्ति।	15
IV	**प्राकृत–बोध या प्राकृत प्रवेशिका** : (संज्ञा, सन्धि, एवं विभक्ति प्रकरण) सूत्रों की व्याख्या एवं प्रयोग।	15

आशीष जैन

Ashish

Nidhi

V	**(अ) प्राकृत सम्भाषण एवं अनुवाद कौशल** **1. प्राकृत सम्भाषण :** आत्मपरिचय, विभक्ति प्रयोग, सर्वनाम शब्दों का प्रयोग (तत्, एतत्, किम् यत्–तीनों लिंग एवं दो वचनों में)। **अव्यय प्रयोग :** (अत्र, यत्र, तत्र, कुत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, एकत्र, आम्, न, अद्य, श्वः, ह्यः, परश्वः, परह्यः, इन्दानीम्, पुरतः पृष्ठतः, वामतः, दक्षिणत, उपरि, अधः, सम्यक्, अपि, च, अतः, एवम्, इति, यदि–तर्हि, यथा–तथा, यदा–तदा, कदा, कति, किम्, कृतः, कथं, किमर्थम्, खलु। **2. कृदन्त प्रत्यय :** क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्त, क्तवतु–प्रत्ययों का प्रयोग। **3. संख्या वाचक शब्द :** एक से एक सौ तक। **(ब) अनुवाद कौशल :** प्राकृत सम्भाषण एवं अनुवाद पर आधारित परियोजना कार्य/मौखिकी परीक्षा के आधार पर मूल्यांकन।	30

सार बिंदु (की वर्ड)/टैग : आगम, संज्ञा, सन्धि, कारक, अव्यय, अनुवाद, सम्भाषण।

भाग्य स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन

1. **प्राकृत साहित्य का इतिहास** – डॉ. जगदीशचंद्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961
2. **प्राकृत स्वयं शिक्षक** – डॉ. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोला, कर्नाटक।
3. **प्राकृत प्रवेशिका** – डॉ. कोमलचन्द्र जैन, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
4. **प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास** – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी।
5. **शौरसेनी प्राकृत व्याकरण** – डॉ. उदयचन्द्र जैन, उदयपुर, प्राकृत भारती; जयपुर।
6. **प्राकृत भाषाओं का व्याकरण** – रिचर्ड पिशेल, हिन्दी अनुवाद – प्रो. हेमचन्द्र जोशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना (बिहार)
7. **मुनि रत्नचन्द्र – "जैन सिद्धान्त कौमुदी", लाहौर।**
8. **अभिनव प्राकृत व्याकरण** – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी

आशीष जैन Ashish

बी. ए. प्राकृत भाषा के पाठ्यक्रम हेतु प्रारूप

भाग अ – परिचय

कार्यक्रम : प्रमाण पत्र	कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष	वर्ष : 2022	सत्र : 2021–22

विषय : प्राकृत भाषा

क्र.	विवरण	
1.	पाठ्यक्रम का कोड	EUA1-JAPR2T
2.	पाठ्यक्रम का शीर्षक	प्राकृत काव्य साहित्य (प्रश्न–पत्र 2)
3.	पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोरकोर्स / इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ....)	कोर कोर्स
4.	पूर्वापेक्षा (Prerequisite) (यदि कोई हों)	इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए, छात्र ने विषय..जैन एवं प्राकृत अध्ययन में उत्तर मध्यमा/ किसी भी विषय में कक्षा 12 /प्रमाण पत्र/डिप्लोमा में लिया हो।..... इस पाठ्यक्रम को निम्नलिखित विषयों के छात्रों द्वारा एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुना जा सकता है–सभी के लिए उपलब्ध **(Open For all)**
5.	पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO)	1. नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक । 2. जैन रामायण की सार्वकालिक व सार्वजनिक उपादेयता के साथ राष्ट्र निर्माण में सहायक। 3. भारतीय संस्कृति के अवबोध एवं महापुरुषों के आदर्श से छात्रों को परिचित कराना। 4. प्राचीन सामाजिक संरचना एवं उत्कृष्ट समाज का ज्ञान। 5. रंग मंचीय कौशल के विकास व लेखन की कला की दृष्टि से उपादेयता। 6. छात्र में कथा लेखन की शैली का विकास। 7. उपदेशात्मक काव्य से नैतिक मूल्यों का विकास।
6.	क्रेडिट मान	06

7.	कुल अंक	अधिकतम अंक: 25 +75	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक: 33

आशीष जैन Ashish

भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु		
व्याख्यान की कुल संख्या–ट्यूटोरियल–प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में) : **L -T- P:- 03**		
इकाई	विषय	व्याख्यान की संख्या
I	**पउमचरियं** (जैन रामायण–विमल सूरि) **सुत्तविहाणं** – प्रथम सर्ग (सम्पूर्ण) पठितांश से व्याख्या **पउमचरियं के सामान्य परिचय पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।**	15
II	**सेतुबंध (प्रवरसेन)** प्रथम आश्वास (सम्पूर्ण) पठितांश से व्याख्या तथा सेतुबंध के सामान्य परिचय संबंधी समीक्षात्मक प्रश्न।	15
III	**कंसवहो (रामपाणिवाद)** प्रथम सर्ग (सम्पूर्ण) – पठितांश से व्याख्या तथा कंसवहो के सामान्य परिचय से संबंधित समालोचनात्मक प्रश्न।	15
IV	**मृच्छकटिकम्** प्रथम अंक – पठितांश प्राकृत अंश से व्याख्या तथा सम्पूर्ण नाटक पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न।	15
V	**वज्जालग्गं –** सज्जन, दुर्जन, मित्र, स्नेह, नीति, वज्जा का पठितांश पर आधारित उपदेशात्मक प्रश्न। **णीदी–संगहो–धम्म–णीदी** : (1 से 100 पद्य) अनुवाद/प्रश्न।	30
सार बिंदु (की वर्ड)/टैग : चरित्रकाव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, जीवन मूल्य		

अनुशंसित /निर्धारित सहायक पुस्तकें –

1. मृच्छकटिकम् – रमाशंकर त्रिपाठी, हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या सहित, मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली, 1969।
2. प्राकृत विमर्श – सरयू प्रसाद अग्रवाल, प्रकाशन, लखनऊ विश्वविद्यालय।
3. पउमचरियं –विमलसूरि, प्राकृत ग्रन्थ परिषद, अहमदाबाद।
4. सेतुबन्ध – प्रवरसेन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
5. कंसवहो – रामपाणिवाद, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, 2002।
6. वज्जालग्गं – जयवल्लभ, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी।
7. णीदी संगहो– आचार्य सुनील सागर, सुनील प्राकृत समग्र भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

आशीष जैन Ashish